International Journal of Sanskrit Research 2025; 11(1): 21-23

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2025; 11(1): 21-23
© 2025 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 26-10-2024
Accepted: 29-11-2024

डॉ. पवनकुमार शर्मा
सहायक आचार्य (संस्कृत) राजकीय महाविद्यालय, रामगंजमंडी, जिला–कोटा, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. पवनकुमार शर्मा
सहायक आचार्य (संस्कृत) राजकीय महाविद्यालय, रामगंजमंडी, जिला–कोटा राजस्थान, भारत

अथर्ववेद मे पर्यावरण उपासनाः आधुनिक विश्व के सन्दर्भ में

पवनकुमार शर्मा

DOI: https://doi.org/10.22271/23947519.2025.v11.i1a.2542

सारांश
भारतीय संस्कृति के मूलतत्त्व हमें वेद में प्राप्त होते हैं चारों वेद जहां विभिन्न शास्त्रों तथा विचारों के उद्गम स्थान है वही यह ज्ञान के उस अनंत ब्रह्मांड का भी प्रतिनिधित्व करते हैं जिसे हम जितना भी अन्वेषण करें वह फिर भी शेष रह जाता है। समसामयिक विषय पर्यावरण के बारे में वर्तमान में संपूर्ण विश्व में बहुत कुछ विचार किया जा रहा है और इसमें सुधार हेतु विभिन्न चिंताएं व्यक्त करते हुए पर्यावरण विशेषज्ञ द्वारा चेतावनी भी दी जा रही है जिसके फल स्वरुप विभिन्न स्तरों पर कार्यक्रम भी किए जा रहे हैं किंतु इनसे विशिष्ट रूप से अथर्ववेद में पर्यावरण के विषय में विचार किया गया है। वह एक सार्वभौमिक संदेश आधुनिक समाज को देता है। इस संदेश से ग्लोबल वार्मिंग के समय में वेदों की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है। अथर्ववेद संहिता में जल की माता के रूप में उपासना कर जल चिकित्सा की ओर निर्देश किया गया है। जल के भूमिगत और वर्षा के रूप में प्राप्त स्वरूप का सम्मान किया गया है। नदियों के प्रवाह के साथ वायु और पक्षियों के क्षेम की कामना की गई है। कृषि सूक्त में जहां जोती हुई भूमि को प्रणाम किया गया है और उससे ऐश्वर्य की कामना की गई है। यह मृदा संरक्षण के प्राचीनतम विचार का प्रतिनिधित्व करता है। मंडूको अर्थात मेंढकों को संबोधित कर वर्ष भर व्रत पालन करने वाले ब्राह्मण अथवा तपस्वियों से उनकी उपमा दी गई है। यह जलवायु और इसके घटकों के प्रति उपासना की अभिव्यक्ति है। गायों की कल्याणकारी ध्वनि से घरों की पवित्रता चाही गई है जो कि ध्वनि से पवित्रता के संबंध का प्रतिपादन करता है अर्थात उत्तम ध्वनि स्वस्थ पर्यावरण को उत्पन्न करने में सहायक है। पृथ्वी सूक्त में विशेष रूप से पृथ्वी की उपासना की गई है। इस तरह अथर्ववेद में पंचमहाभूतों की उपासना के साथ इसके अंदर समाविष्ट विभिन्न चराचर तत्वों की स्थिति का वर्णन करते हुए उनके विशिष्ट स्वरूप को उल्लेखित किया गया है। सारांशतः अथर्ववेद से सार्वभौम पर्यावरण संदेश हमारे आधुनिक समाज को मिलता है जो निश्चित रूप से पहले के अपेक्षा वर्तमान में अधिक प्रासंगिक है जबकि मानव सभ्यता हेतु अब तक ज्ञात सबसे अनुकूल इस ग्रह पर जीवन की संभावनाओं को खतरा उत्पन्न हो रहा है अतः अथर्ववेद का पर्यावरण संदेश विशेष रूप से विचारणीय एवं अनुकरणीय है।

कूटशब्दः अथर्ववेद, पर्यावरण, वायु, पृथ्वी, जल, गाय, सूर्य

प्रस्तावना
विश्व के सर्वाधिक प्राचीनग्रंथो के रूप में वेद सभी के लिए समादरणीय है किन्तु भारतीय समाज के लिए तो वेद पूजनीय है क्योंकि भारतीय संस्कृति के तत्वों का मूल स्रोत प्रायः हमें वेदों में ही प्राप्त होता है। विश्व के अधिकांश देशों में जब मानव सभ्यता उस विकास को प्राप्त नहीं हुई थी उस समय भारतीय समाज वेदध्वनि से गुंजायमान था जिसमें ज्ञान विज्ञान की पवित्रधारा बह रही थी। चारों वेदों में विभिन्न विषयों के आरम्भिक सूत्र हमें प्राप्त होते हैं काव्य, नाटक, कला इत्यादि क्षेत्रों के बारे में वैदिक साहित्य उल्लेख है। किन्तु वर्तमान में जिस तरह पृथ्वी के औसत तापमान में वृद्धि हुई है समस्त प्रबुद्ध मानव समाज पर्यावरण को लेकर चिन्तित हो उठा है। क्योंकि यह एक तरह से मानव प्रजाति के पृथ्वी पर अस्तित्व को लेकर चेतावनी जैसा है। ऐसा समसामयिक विषय पर्यावरण के बारे में अथर्ववेद में विशिष्ट रूप से विचार किया गया है। जिसमें अनेक ऐसे स्थल है। जहां पर प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से प्रकृति और उसके अंशो को लक्ष्य पर सार्वभौमिक संदेश समाज हेतु स्थापित किए गए हैं, जो संपूर्ण विश्व के लिए ऐसे समय में विशेष रूप से पालनीय हैं। ऐसे स्थलों पर यहां विचार किया जा रहा है जिन पर इस प्रसंग में अभी तक शोध अंतराल है क्योंकि वेद उस महासागर की तरह है जिनसे जितनी बार उनमें से रत्न निकले जाएं फिर भी उनमें रत्न शेष रहेंगे उसी तरह इस विषय का यहां विचार अपेक्षित है।
अथर्ववेद में प्रथम कांड से ही लोकहित हेतु चिंतन किया गया है। विविध रोग शांति हेतु सूक्त हमें यहां प्राप्त होते हैं किंतु प्रथम कांड में ही जल को महत्व देते हुए उसकी याचना की गई है।

ईशाना वार्याणां क्षयन्तीश्चर्षणीनाम् अपो याचामि भेषजम्[1]

यहां यहां विशेष रूप से चिन्तनीय है कि तत्कालीन समय के जल की उपलब्धता थी। अनावृष्टि जलप्रदूषण इत्यादि समस्या के अभाव में भी जल की भक्ति उल्लेखनीय है। अथर्ववेद में जल की माता के रूप में उपासना की गई है। जो अद्भुत है और प्रार्थना की गई है कि कल्याण मय रस में हम भागीदार बने।

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः।
उशतीरिव मातरः।।[2]

जल चिकित्सा की और निर्देश करते हुए प्रार्थना की गई जल हमारे लिए कल्याणकारी और प्रसन्नता देने वाले हो वह आरोग्य प्रदान करें।

शंनो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शं योरभि स्रवन्तु नः।[3]

यह जल को उपभोग की वस्तु से उपासना के स्तर पर प्रतिष्ठित करने वाला मंत्र है। जल उपासना के योग्य वस्तु हो जाए तो व्यक्ति उसका अपव्यय या प्रदूषण के विषय में कल्पना भी नहीं करता है। जल से आरोग्य की मांग की गई है जो वास्तव में अनेक रोगों में विविध औषधीयों के साथ अथवा स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त हो रोग शमन करता भी है। ऋषि द्वारा की गई प्रार्थना में जल के अनेक रूपों का स्पर्श किया गया है जो वैचारिक व्यापकता के साथ दृष्टि की सूक्ष्मता का परिचायक है। साथ ही जल के सभी रूपों की उपास्यता और कल्याणकारिता भी सिद्ध करता है।

शं न आपो धन्वन्या ३ः शमुसन्त्वनूप्याः।
शं न खनित्रिमा आपः शमु याः कुम्भ आभृता
शिवा नः सन्तु वार्षिकीः।।[4]

यह जल के भूमिगत और वर्षा रूपों के समुचित उपयोग व सम्मान का परोक्ष संदेश भी हमें प्रदान करता है।
नदियों के प्रवाह के साथ वायु प्रवाह और साथ में रह रहे पक्षियों के क्षेम की कामना की गई है। यह समावेशी जीवन की कामना का विषय है जिसमें अपने साथ चराचर की भी कुशलता चाही है।5 6
अथर्ववेद के विभिन्न सूक्तों में पंचभूतों की उपासना कर उनका महत्व स्वीकार किया गया है। इसके विभिन्न रूपों की गई स्तुति विचारणीय और प्रेरक है। कृषि सूक्त में जोती हुई अर्थात् खेती योग्य भूमि को प्रणाम किया गया है और उसमें ऐश्वर्य की कामना की गई है।

सीते वन्दामहे त्वार्वाची सुभगे भव।
यथा नः सुमना अपो यथा नः सुफला भुवः।।[7]

यह मृदासंरक्षण के साथ कृषि योग्य भूमि के संरक्षण का प्राचीनतम विचार स्थल है। जो अभी भी नितांत प्रासंगिक है। क्योंकि वर्तमान समय में जहां कृषि योग्य भूमि कम होती जा रही है वहीं कृषि भूमि में मिट्टी गुणवत्ता भी रासायनिक प्रदूषण से प्रभावित है। मरूत्गण व पर्जन्यदेव की उपासना से पृथ्वी की समृद्धि हेतु पर्याप्त वर्षा की कामना की गई है।8 जिसमें मण्डूको को भी संबोधित कर उन्हें वर्ष भर व्रत पालन करने वाले ब्राह्मण (तपस्वियों) से उपमा दी गई है।9 यह जलवायु और इसके घटकों के प्रति उपासना की अभिव्यक्ति है जो इसके संरक्षण का शाश्वत उपदेश हमें प्रदान करती है। समृद्धि की आधारभूता वृष्टि के सूचक प्राणी मात्र मेंढक को भी अतिशय आदर प्रदान करना भारतीय संस्कृति के उदात्त स्वरूप का दर्शन हमें कराता है।

गायों की उपासना कर उनसे बल और स्वास्थ्य के कामना की गई है। उनकी कल्याणकारी ध्वनि से घरों को पवित्रता चाही गई है–

यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित कृणुथा सुप्रतीकम्।
भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो वृहद् वो वय उच्यते सभासु।।[10]

मिट्टी के संरक्षण के लिए अभी अनेक आंदोलन चलाया जा रहे हैं इसके महत्व और औषधीय प्रयोग से परिचय वैदिक कालीन है। मृतिका चिकित्सा में बाँबी की मिट्टी को अतिसार आदि व्याधियों के शमन की औषधि कहा गया है। खेत की मिट्टी चर्मरोग व अतिसार आदि रोगो की औषधि बतायी गई है। मृतिका चिकित्सा के ज्ञान से मृदा संरक्षण के विषय में वैदिक युग सावचेत था जो हमारे लिए भी अनुकरणीय है।[11]
सूर्य किरणों से पृथ्वी पर विचरण करने वाले कीटाणुओं की नाश की प्रार्थना की गई है जिससे सूर्य ताप से रोग नाश के ज्ञान का स्पष्ट संकेत है। यह सूर्यकिरणों से विविध रोग कीटाणु के नाश की और संकेत कर सूर्य किरण चिकित्सा का भी संकेत है जो की सूर्यताप के सकारात्मक उपयोग के तत्कालीन ज्ञान का परिचय कराता है।

उद्यन्नादित्यः क्रिमीन् हन्तु निम्नोचन् हन्तु रश्मिभिः।
ये अन्त क्रिमयो गवि।।[12]

यह वर्तमान में सूर्य ऊर्जा के सकारात्मक उपयोग का शाश्वत संदेश हमें प्रदान करता है।
मित्र देव से किरणो से पृथ्वी को ठीक से व्याप्त करने की प्रार्थना की गई है जो कि आज के ग्लोबल वार्मिंग की समस्या का पूर्वाभास प्रतीत होता है।
यहां इसमें दीर्घ जीवन की कामना की गई है वरुण देव वायु और अग्नि से राष्ट्र के स्थिरता की प्रार्थना भी राष्ट्रधारण सूक्त में की गई है।[13] यह राष्ट्रीय जीवन की विचारधारा का परिचय करता है जो कि वर्तमान में जनसाधारण प्राय देखने में नहीं आती है हम व्यक्तिगत सुविधाओं के लिए राष्ट्रहित का बलिदान करते हैं व्यक्तिगत सुविधाओं हेतु पॉलिथीन का उपयोग, जल का दुरुपयोग, व्यक्तिगत स्वच्छता को प्राथमिकता देकर सामाजिक गंदगी से निरपेक्ष, शारीरिक श्रम से बचकर पेट्रोल डीजल का दुरुपयोग, इत्यादि अनेक उदाहरण हमें स्वार्थी सिद्ध करते हैं जबकि वैदिक जीवन समावेशी राष्ट्रीय जीवन और संस्कृति का पोषक और उपदेशक है।[14]
शुद्ध वायु को उस समय औषधि रूप कल्याणकारी और देवदूत स्वीकार किया गया है। आधुनिक बड़े शहरों में प्रदूषण बढ़कर वातावरण में ऑक्सीजन लेवल को घटा रहा है। वह ठीक वैदिक मंत्र की सार्वभौमिक सत्यता को प्रमाणित कर रहा है।

आ वातवाहि भेषजं वि वात वाहियद् रपः। त्वं हि विश्वभेषज
देवानां दूत ईयसे।।[15]

वैदिक वैचारिक दृष्टिकोण न केवल पृथ्वी से संबंधित जीवों के प्रति केंद्रित था अपितु वह इतना व्यापक था कि द्युलोक तथा अंतरिक्ष प्राणियों के प्रति जो अज्ञात अपराध हो गए हैं उनके लिए भी क्षमा मांगी गई है।
भूमि को माता मानते हुए देव माता अदिति के समान पूजनीय बताया है अंतरिक्ष को भाई तथा द्युलोक को पिता के समान बताया गया है अर्थात अंतरिक्ष के जीवन अथवा पर्यावरण तक की चिंता मानो यहां की गई है जो वेद कालीन उदात्त विचारधारा का परिचायक है।

भूमिर्मातादितिर्नो जनित्रं भ्रातान्तरिक्षमभिशस्त्या नः।
द्यौर्नः पिता..... ।[16]

अथर्ववेद में बारहवें काण्ड का पृथ्वी सूक्त तो प्रसिद्ध ही है।
पृथ्वी सूक्त के पहले ही मंत्र में सत्य तप त्याग से पृथ्वी धारण की बात कही गई है और उत्पन्न होने वाले जीवो के पालन हेतु स्थान की याचना की गई है।17 यह पृथ्वी का त्यागपूर्वक आवश्यकता अनुसार उपभोग का प्रसंग है जिससे आने वाले जीवो हेतु संसाधन सुरक्षित रह सके अतिशय उपभोग भविष्य में ही नहीं वर्तमान में ही विनाश से परिचय करता है। पृथ्वी की तापमान बढने जैसी समस्या का यहां समाधान प्रस्तुत करते हुए उसके धारण हेतु त्याग तप और सत्य को आधार बताया है जो कि सार रूप में संसाधनो का आवश्यकतानुसार न्यूनतम उपयोग और न्यूनतम उपभोग का मार्ग दिखाता है। इसी की शिक्षा भारतीय संस्कृति त्याग और अपरिग्रह के सिद्धांतो से देती है। इस बिन्दु पर यहां ऋषि युगद्रष्टा वैज्ञानिक की तरह विचार करते है।
सूक्त मे अनेक बार पृथ्वी को माता कहा गया है। मां का शोषण अथवा विनाश तो कोई पुत्र कर नहीं सकता वह आवश्यकता अनुसार दुग्धपान कर सेवा कर मात्र ऋण चुकाने का प्रयास ही करता है चुका नहीं पता है। इसी भावना से यदि हम त्याग पूर्वक आवश्यकता अनुसार उपभोग की संस्कृति का निर्वाह करें तो भूमि अन्नपूर्णा माता बनाकर हमारे लिए कल्याणकारी होगी नहीं तो यही भूमि अपना रौद्र रूप काली प्रकट कर स्वयं हमारा नाश करवा देगी।

इसी बात को ऋषि ने कहा है–

विश्वस्वं मातरमोषधीनां ध्रुवां भूमिं पृथिवीं धर्मणा धृताम्।
शिवां स्योनामनु चरेम विश्वहा।।[18]

श्रेष्ठ वनस्पतियाँ और औषधीयां देने वाली ऐसी पृथ्वी माता की हम सदैव सेवा करें। विभिन्न मान्यता वाले भिन्न भाषाभाषी लोगों को पृथ्वी एक परिवार के रूप में आश्रय देती है। यह गुरुत्वाकर्षण शक्ति से धारण करने वाली क्षमता से युक्त है। यह पापी और पुण्य आत्मा दोनों प्रकार के मनुष्यों को सहन करती है। सभी को जल, हवा, सूर्य का प्रकाश उपलब्ध करवाती है।19 अर्थात् पांच भौतिक तत्वों से भी को समान रखते हुए प्राकृतिक न्याय किया गया है यही सहिष्णुता समानता प्राणी आपस में बनाए रखें यह परोक्ष संदेश इन मंत्रो से मिलता है। यदि इस वैदिक सिद्धांत का पालन हो तो विश्व मे अनेक जगह विविध संसाधनों को लेकर होने वाले युद्ध ना हो।

सूर्य को इंद्र भी कहा गया है तो सूर्य को विष्णु भी कहा गया है–

त्वमिन्द्रस्त्वं महेन्द्रस्त्वं लोकस्त्वं प्रजापतिः।
जुह्वति जुह्वतस्तवेद विष्णो बहुधा वीर्याणि।[20]

अर्थात प्रकृति और इसके पांच भौतिक तत्व वैदिक दृष्टि से किसी भी प्रकार से उपभोग के विषय नहीं है उन्हें पूजनीय मानकर उनके गुणो की प्रशंसा कर उनकी उपासना बारम्बार विविध नामों से की गई है। उनसे अपने अपराधों के लिए क्षमा मांगते हुए कल्याण की प्रार्थना की गई है। जो प्रत्यक्ष उसके लिए शुभ चाहा गया है किंतु जो चराचर सुदूर है जो प्राणी सम्पूर्ण अंतरिक्ष लोक में भी है उनकी मंगल कामना की गई है। पांच भौतिक तत्वों के सब रूपों की उपासना यहां ऋषि करते हैं। वेद में पूरी पृथ्वी को परिवार मानने से भी अधिक पूरे ब्रह्माण्ड को ही अपने परिवार के रूप मे स्वीकार कर उसके कल्याण की प्रार्थना की गई है। अग्नि सूर्य से लेकर वर्षा कालीन जीव मेंढक उनमें छोटी मेंढकी 21 तक को मंत्रो में स्थान दिया गया है। जिनसे वैदिक संस्कृति सभ्यता में गुरु–लघु, निज–पर, उपयोग–अनुपयोग का भाव छोड़कर विश्व मंगल की कामना प्रधान रूप से द्योतित होती है जो विश्व में अदृश्य ब्रह्मांड मंगल तक की कामना तक बढ़ जाती है।

निष्कर्षत

अथर्ववेद के पर्यावरण मे प्रकृति के सभी घटक आ जाते है। यहां केवल पृथ्वी सम्बद्ध तत्वो पर ही विचार नही किया गया अपितु अप्रत्यक्षलोक की भी मंगल कामना की गई है। जो कि निःस्वार्थ ब्रह्माण्ड प्रेम का उदाहरण है। अथर्ववेद प्रकृति के उपभोग का मार्ग नही बताकर इससे प्रेम और उपासना का शास्त्र है। जहां से प्रकृति संरक्षण के साथ प्रकृति प्रतिष्ठा की सिद्धि होती है। प्रकृति की सुप्रतिष्ठा ही चराचर के लिए अथर्ववेद का सार्वभौम कल्याणकारी संदेश है। अथर्ववेद में प्रकृति, इसके पांच भौतिक तत्व दृश्यमान जगत और अदृश्य मान जगत की ऋषि समूह ने अनके प्रकार से उपासना कर उनसे कल्याण चाहा है। प्रकृति तत्वों के उपभोग के समय होने वाले अपराधों के लिए क्षमा चाही है साथ ही सहिष्णुता परोपकार त्याग के साथ संसाधनों के सीमित प्रयोग का परोक्ष संदेश मानव समाज को दिया है जो की सार्वभौमिक है अत एवं अखिल विश्व के लिए कल्याणकारी भी है। अथर्ववेद की पर्यावरण शिक्षा सर्वदा प्रासंगिक रहेगी अतः अनुशीलनीय है।

संदर्भ सूची

1. अथर्ववेद संहिता 1ध्5ध्4 सरल हिन्दी भावार्थ सहित भाग–1 संपादक पंण्डित आचार्य श्रीराम शर्मा संस्करण 2015 प्रकाशक युगनिर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट मथुरा। पृष्ठ 5
2. अथर्ववेद संहिता 1/5/2 वहीं पृष्ठ 5
3. अथर्ववेद संहिता 1/6/1 वहीं पृष्ठ 5
4. अथर्ववेद संहिता 1/6/4 वहीं पृष्ठ 5
5. सं सं स्रवन्तु सिन्धवः सं वाताः सं पतत्रिणः।..... अथर्ववेद संहिता 1/15/11 वहीं पृष्ठ 11
6. सं सं स्रवन्तु पशवः समश्वा समु पूरूषाः.....। अथर्ववेद संहिता 2/2/3 वहीं पृष्ठ 21
7. अथर्ववेद संहिता 3/17/8 वहीं पृष्ठ 20
8. अथर्ववेद संहिता 4/15 सम्पूर्ण सूक्त वहीं पृष्ठ 17–19
9. अथर्ववेद संहिता 4/15/13 वहीं पृष्ठ 19
10. अथर्ववेद संहिता 4/21/6 वहीं पृष्ठ 26
11. उपजीका उद्भरन्ति.....। अरूस्राणामिदं महत् पृथिव्या.....। अथर्ववेद संहिता 2/3/4, 5 वहीं पृष्ठ 3
12. अथर्ववेद संहिता 2/32/1 वहीं पृष्ठ 26
13. अथर्ववेद संहिता 3/8/1 वहीं पृष्ठ 8
14. अथर्ववेद संहिता 4/30/1 वहीं पृष्ठ 8
15. अथर्ववेद संहिता 4/13/3 वहीं पृष्ठ 15
16. अथर्ववेद संहिता 6/120/2 वहीं पृष्ठ 56
17. सत्यं वृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति.....। अथर्ववेद संहिता 12/1/1 पृष्ठ 1 सरल हिन्दी भावार्थ सहित भाग–2 संपादक पंण्डित आचार्य श्रीराम शर्मा संस्करण 2015 प्रकाशक युगनिर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट मथुरा।
18. अथर्ववेद संहिता 12/1/17 वहीं पृष्ठ 4
19. अथर्ववेद संहिता 12/1/45 वहीं पृष्ठ 8
20. अथर्ववेद संहिता 17/1/18 वहीं पृष्ठ 4
21. उपप्रवद मण्डूकि वर्षमा वद तादुरि।..... अथर्ववेद संहिता 4/15/14, 15 पृष्ठ 19 सरल हिन्दी भावार्थ सहित भाग–1 संपादक पंण्डित आचार्य श्रीराम शर्मा संस्करण 2015 प्रकाशक युगनिर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट मथुरा।